



સિદ્ધિ પબ્લિશર્સ

કબ્ર કી પહલી રાત

QABR KI PAHLI RAAT(GUJARATI)

- | | |
|---|----|
| કબ્રો બ ઝાહિર યકસાં મગર અન્દર..... | 5 |
| પહલે ઐસી કોઈ રાત નહીં ગુઝારી હોગી | 11 |
| આખિરત કી પહલી મન્ઝિલ કબ્ર હે | 13 |
| દુન્યા મેં મુસાફિર બન કર રહો | 19 |
| ફરમાં બરદાર પર કબ્ર કી રહમત | 23 |
| સિંગર (ગુલુકાર) દા'વતે ઈસ્લામી મેં કેસે આયા ? | 27 |
| વિબાસ કે 14 મ-દની ફૂલ | 32 |

શૈખે તરીકત, અમીરે અહલે સુન્નત, જાનિયે દા'વતે ઈસ્લામી, હઝરત અલ્લામા મૌલાના અબૂ ઝિલાલ

મુહમ્મદ ઈબ્રાહીમ અવાર કારિંદી ર-ઝવી داست برکاتیم العالیہ

مکتبۃ الدینہ
(مکتبۃ اسلامی)

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

કિતાબ પઢને કી દુઆ

અઝ : શૈખે તરીકત, અમીરે અહલે સુન્નત, બાનિયે દા'વતે ઈસ્લામી, હઝરત અલ્લામા મૌલાના અબૂ બિલાલ મુહમ્મદ ઈલ્યાસ અત્તાર કાદિરી ર-ઝવી دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ
દીની કિતાબ યા ઈસ્લામી સબક પઢને સે પહલે ઝૈલ મેં દી હુઈ દુઆ પઢ લીજિયે إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ જો કુછ પઢેંગે યાદ રહેગા. દુઆ યેહ હૈ :

اللَّهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَأَنْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ

તરજમા : ઐ અલ્લાહ عَزَّوَجَلَّ હમ પર ઈલ્મો હિક્મત કે દરવાઝે ખોલ દે ઓર હમ પર અપની રહમત નાઝિલ ફરમા ! ઐ અ-ઝમત ઓર બુઝુર્ગી વાલે । (المستطرف ج ١ ص ٤٠٤ دار الفكر بيروت)
નોટ : અવ્વલ આખિર એક એક બાર દુરુદ શરીફ પઢ લીજિયે.

તાલિબે ગમે મદીના
વ બકીઅ
વ મઝિરત



13 શવ્વાલુલ મુકર્રમ 1428 હિ.

કબ્ર કી પહલી રાત

યેહ રિસાલા (કબ્ર કી પહલી રાત)

શૈખે તરીકત, અમીરે અહલે સુન્નત, બાનિયે દા'વતે ઈસ્લામી હઝરત અલ્લામા મૌલાના અબૂ બિલાલ મુહમ્મદ ઈલ્યાસ અત્તાર કાદિરી ર-ઝવી ઝિયાઈ دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ ને ઉર્દૂ ઝબાન મેં તહરીર ફરમાયા હૈ.

મજલિસે તરાજિમ (દા'વતે ઈસ્લામી) ને ઈસ રિસાલે કો ગુજરાતી રસ્મુલ ખત મેં તરતીબ દે કર પેશ કિયા હૈ ઓર મક-ત-બતુલ મદીના સે શાઅેઅ કરવાયા હૈ. ઈસ મેં અગર કિસી જગહ કમી બેશી પાઅે તો મજલિસે તરાજિમ કો (બઝરીઅએ મક્તૂબ, ઈ-મેઈલ યા SMS) મુત્તલઅ ફરમા કર સવાબ કમાઈયે.

રાબિતા : મજલિસે તરાજિમ (દા'વતે ઈસ્લામી)

મક-ત-બતુલ મદીના

સિલેક્ટેડ હાઉસ, અલિફ કી મસ્જિદ કે સામને, તીન દરવાઝા,

અહમદઆબાદ-1, ગુજરાત, ઈન્ડિયા

MO. 9374031409 • E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

أَلْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

કબ્ર કી પહલી રાત¹

શૈતાન હરગિઝ નહીં ચાહેગા કે યેહ રિસાલા (36 સફહાત) મુકમ્મલ પઢ કર કબ્ર કી પહલી રાત કી તથ્યારી કા આપ કા ઝેહન બને, શૈતાન કા વાર નાકામ બના દીજિયે

દુરૂદ શરીફ કી ફઝીલત

દો જહાં કે સુલ્તાન, સરવરે ઝીશાન, મહબૂબે રહમાન
صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ કા ફરમાને મઁફિરત નિશાન હૈ : મુઝ પર દુરૂદે
પાક પઢના પુલ સિરાત પર નૂર હૈ જો રોઝે જુમુઆ મુઝ પર
અસ્સી બાર દુરૂદે પાક પઢે ઉસ કે અસ્સી સાલ કે ગુનાહ મુઆફ
હો જાઓંગે. (الجامعُ الصَّغِيرُ لِلسُّنُوطِي ص ۳۲۰ حديث ۵۱۹۱ دار الكتب العلمية بيروت)

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ عَلَى مُحَمَّدٍ

صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

કોઈ ગુલ બાકી રહેગા ન યમન રહ જાએગા પર રસૂલુલ્લાહ કા દીને હસન રહ જાએગા

હમ સફીરો બાગ મેં હૈ કોઈ દમ કા ચહ્ચહા બુલબુલેં ઉડ જાઓંગી સૂના યમન રહ જાએગા

અત્વસો કમ ખ્વાબ કી પોશાક પર નાઝાં ન હો

ઈસ તને બે જાન પર ખાકી કફન રહ જાએગા

1: યેહ બયાન અમીરે અહલે સુન્નત હઝરતે અલ્લામા મૌલાના મુહમ્મદ ઈલ્યાસ અત્તાર કાદિરી ર-ઝવી رحمته الله عليه ને દા'વતે ઈસ્લામી કે તીન રોઝા સુન્નતોં ભરે ઈજતિમાઅ (સહરાએ મદીના બાબુલ મદીના કરાચી) મેં 27 રબીઉન્નૂર 1431 હિ. (14-3-2010) ઈતવાર કે રોઝ ફરમાયા જો ઝરૂરતન તરમીમ કે સાથ તબ્અ કિયા ગયા.

મજલિસે મક-ત-બતુલ મદીના

करमाने मुस्तक़ा صلى الله عليه وآله وسلم : जो शापस मुज़ पर दुर्दे पाक पढ़ना भूल गया वोह ज़न्त का रास्ता भूल गया. (1/1)

मैं ने आप के हाथ पाँउं दबाये थे आज रात क़ब्र में हाथ पाँउं किस ने दबाये होंगे ! **अै बाबाजान !** कल रात घर के अन्दर मैं ने आप को पानी पिलाया था आज रात क़ब्र में जब प्यास लगी होगी और आप ने पानी मांगा होगा तो पानी कौन लाया होगा ! **अै बाबाजान !** कल रात तो आप के जिस्म पर यादर मैं ने उढाई थी आज रात किस ने उढाई होगी ? **अै बाबाजान !** कल रात तो घर के अन्दर आप के येहरे से पसीना मैं पूँछती रही हूँ आज रात क़ब्र में किस ने पसीना साफ़ किया होगा ! **अै बाबाजान !** कल रात तक तो आप जब भी मुझे पुकारते थे मैं आ जाती थी आज रात क़ब्र में आप ने किसे पुकारा होगा और पुकार सुन कर कौन आया होगा ! **अै बाबाजान !** कल रात जब आप को भूक लगी थी तो मैं ने जाना पेश किया था, आज रात जब क़ब्र में भूक लगी होगी तो जाना किस ने दिया होगा ! **अै बाबाजान !** कल रात तक तो मैं आप के लिये तरह तरह के जाने पकाती रही हूँ आज क़ब्र की पहली रात किस ने पकाया होगा !

उठरते सय्यिहुना हसन बसरी رحمه الله الفوى गम की मारी और दुषियारी म-दनी मुन्नी की येह दद त्मरी बातें सुन कर रो पडे और करीब आ कर इरमाया : **अै बेटी !** इस तरह नही बढके यूँ कडो ! **अै बाबाजान !** दइन करते वक्त आप का येहरा किंढला रुभ किया गया था, आया आप भी उसी हालत पर हैं या येहरा दूसरी तरफ़ इैर दिया गया है ? **अै बाबाजान !** आप को साफ़ सुथरा कइन पहना कर दइनाया गया था क्या अब भी वोह साफ़ सुथरा ही है ? **अै बाबाजान !** आप को क़ब्र में सहीह व सादिम बदन के साथ रखा गया था, आया अब भी जिस्म सलामत है या उसो कीडों ने जा लिया है

इरमा ने मुस्तका عَلَى اللَّهِ تَوَكَّلْ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझे पर दुर्रदे पाक न पढा तलकीक वोह बढभाप्त हो गया। (क़ब्र)

औं बाबाजान ! उ-लमा इरमाते हैं के क़ब्र की पहली रात बन्दे से इमान के बारे में सुवाल किया जायेगा तो कोई जवाब देगा और कोई मायूस रहेगा तो आप ने इस सुवाल का दुरुस्त जवाब दे दिया है या नाकाम रहे हैं ? औं बाबाजान ! उ-लमा इरमाते हैं के बा'ज मुर्दों पर क़ब्र कुशा-दगी करती है और बा'ज पर तंगी तो आप पर क़ब्र ने तंगी की है या कुशा-दगी ? औं बाबाजान ! उ-लमा इरमाते हैं के किसी मय्यित के क़फ़न को जन्नती क़फ़न से और किसी के क़फ़न को जलन्नम की आग के क़फ़न से बढल दिया जाता है तो आप का क़फ़न आग से बढला गया या जन्नती क़फ़न से ? औं बाबाजान ! उ-लमा इरमाते हैं के क़ब्र किसी को इस तरह दबाती है जिस तरह मां अपने बिछड़े हुअे लाल को इर्ते शक़्त से सीने के साथ थिमटा लेती है और किसी को गज़ब नाक छो कर इस कदर जोर से थियती है के उस की पस्वियां टूट कूट कर अक दूसरे में पैवस्त छो जाती हैं तो क़ब्र ने आप को मां की तरह नरमी से दबाया, या पस्वियां तोड फ़ोड डाली हैं ? औं बाबाजान ! उ-लमा इरमाते हैं के मुर्दे को जब क़ब्र में उतारा जाता है तो वोह दोनों सूरतों में पछताता है, अगर वोह नेक बन्दे है तो इस बात पर पछताता है के उस ने नेकियां जियादा क्यूं न कीं और अगर गुनहगार है तो इस पर, के गुनाह क्यूं किये ! तो औं बाबाजान ! आप नेकियों की कमी पर पछताये या गुनाहों पर ? औं बाबाजान ! कल जब मैं आप को पुकारती थी तो मुझे जवाब देते थे, आज मैं कितनी बढ नसीब हूं के क़ब्र के सिरडाने षडी छो कर पुकार रही हूं मगर मुझे आप के जवाब की आवाज सुनाई

करमाने मुस्तफा صلى الله تعالى عليه وآله وسلم : जिस ने मुझ पर दस मरतबा सुबह और दस मरतबा शाम दुर्रदे पाक पढा उसे
कियामत के दिन मेरी शकाअत मिलेगी. (Sahih)

नहीं देती ! **ऐ बाबाजान !** आप तो मुझ से जैसे जुदा हुअे के
कियामत तक दोबारा नहीं मिल सकते. **ऐ जुदाअे रहमान !**
कियामत के मैदान में मुझे अपने बाबाजान की मुलाकात से महरूम
न करना.

उठरते सय्यिदुना **उसन** असरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكُبْرَى की येह
भातें सुन कर वोह म-दनी मुन्नी अर्ज गुजार लुई : **ऐ मेरे**
सरदार ! आप के नसीहत आमोअ कलिमात ने मुझे प्वाबे गइलत
से बेदार कर दिया है. ईस के बा'द वोह रोती लुई उठरते
सय्यिदुना **उसन** असरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكُبْرَى के साथ वापस लौट आई.

(المواعظ العصفورية لابی بكر بن محمد العصفورى، مترجم ص ۱۱۸ بتصرف مكتبه اعلى حضرت)

आंभें रो रो के सुजाने वाले जाने वाले नहीं आने वाले
कोई दिन में येह सरा गिजड है अरे ओ छाउनी छाने वाले
नईस ! मैं भाक लुवा तू न मिटा है ! मेरी जान के भाने वाले
साथ ले लो मुझे मैं मुजरिम हूँ राह में पडते हैं थाने वाले

डो गया धक से कलेजा मेरा

डाअे रुप्सत की सुनाने वाले

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلٰی مُحَمَّدٍ

कब्रें ब जाडिर यकसां मगर अन्दर.....

भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! कल्मी न कल्मी तो कब्रिस्तान

में जाने का आप सन्मी को ईत्तिफाक लुवा डोगा. क्या कल्मी गौर

इरमाने मुसक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुइइ शरीफ़ न पढा उस ने जका की. (अल-अरब)

क़िया के क़ब्रिस्तान की सोग-वार इजाअें, गमनाक़ हवाअें ज़बाने डाल से अे'लान कर रही हैं : अै दुन्यवी ज़िन्दगी पर मुत्मईन रहने वालो ! तुम सभी को अेक न अेक दिन यहाँ वीराने में क़ब्र के गडरे गढे के अन्दर आ पडना है. याद रभिये ! येह क़ब्रें ज़ो गीपर से अेक जैसी दिभाई देती हैं ज़रूरी नहीं के ईन की अन्दरूनी डालतें भी यक़सां हों, ज़ो हां ईस मिट्टी के ढेर तले दईन होने वाला अगर कोई नमाजी था, र-मजानुल मुबारक के रोजे रभने वाला था, सारा माडे मुबारक या कम अज कम आभिरी अ-श-रअे मुभा-रका का अे'तिकाइ करने वाला था, माडे र-मजान का आशिक व क़द्रदान था, ईर्र होने की सूरत में अपनी ज़कात पूरी अदा करने वाला था, रिजके डलाल कमाने वाला था, ब कदरे किफ़ायत डलाल रोजी पर कनाअत करने वाला था, तिलावते कुरआन करने वाला था, तडजुद, ईशराक व याशत और अव्वाबीन के नवाइल अदा करने वाला था, आजिजी करने वाला था, हुस्ने अप्लाक का पैकर था, शरीअत के मुताबिक अेक मुट्टी तक दाढी बढाने वाला था, ईमामे का ताज सर पर सजाने वाला था, सुन्नतों का मतवाला था, मां बाप की इरमां बरदारी करने वाला था, बन्दों के हुकूक अदा करने वाला था, अद्लाड عَزَّوَجَلَّ और उस के प्यारे मडभूब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का याडने वाला था, सडाबअे किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان और अडले बैते उज़्जाम और औदियाअे किराम رَحْمَتُهُمُ اللهُ السَّلَام का दीवाना था, तो उस की क़ब्र ज़ो गीपर से मिट्टी की छोटी सी ढेरी नुमा दिभाई दे रही है, डो सकता है के अद्लाड व रसूल عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के इजलो करम से उस का अन्दरूनी हिस्सा ता डदे निगाड वसीअ डो युका डो, क़ब्र में जन्नत की

करमाने मुस्तफा صلى الله تعالى عليه وآله وسلم : जो मुज़ पर रोजे जुमुआ दृष्ट शरीफ़ पड़ेगा में कियामत के दिन उस की शफ़ाअत करेगा. (क़ुरआन)

भिडकी फुली छुई हो और ईस मिट्टी के जाहिरी ढेर तले जन्नत का हसीन भाग मौजूद हो. दूसरी तरफ़ ईसी मिट्टी के ढेर तले दफ़न होने वाला अगर बे नमाज़ी था, र-मजानुल मुबारक के रोजे ज़ान बूज़ कर बरबाद करने वाला था, र-मजानुल मुबारक की रातों में गलियों के अन्दर किकेट वगैरा फेलों के ज़रीअे मुसल्मानों की ईबादतों या नींदों में फलल डालने वाला या ईस तरह के फेल फेलने वालों का तमाशाई बन कर उन की हौसला अफ़जाई करने वाला था, ईर्ज़ होने के बा वुजूद ज़कात की अदाअेगी में बुफ़ल करने वाला था, उराम रोज़ी कमाने वाला था, सूद व रिश्वत का लैन दैन करने वाला था, लोगों के कर्ज़े दबा लेने वाला था, शराब पीने वाला था, ज़ूआ फेलने वाला था, शराब व ज़ूअे के अडे यलाने वाला था, मुसल्मानों की बिला ईज़ाअते शर-ई हिल आज़ारियां करने वाला था, मुसल्मानों को उरा धमका कर भत्ता वुसूल करने वाला था, तावान की फातिर मुसल्मानों को ईगवा करने वाला था, योरी करने वाला था, डाका डालने वाला था, अमानत में फियानत करने वाला था, ज़मीनों पर ना ज़ईज कब्जे करने वाला था, बेबस किसानों का फून यूसने वाला था, ईक्तिदार के नशे में बद मस्त हो कर जुल्मो सितम की आंघियां यलाने वाला था, दाढी मुंडवाने या अेक मुट्ठी से घटाने वाला था, झिम्में डिरामे देफने दिफाने वाला था, गाने बाजे सुनने सुनाने वाला था, गाली गलौय, जूट, गीबत, युगली, तोहमत व बद गुमान्नी और तकब्बुर का आदी था, मां बाप का ना इरमान था, तो हो सकता है के मिट्टी के ईस पुर सुकून नज़र आने वाले ढेर

ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : صَلَّيْ اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ : મુઝ પર દુરુદે પાક કી કસરત કરો બેશક યેહ તુમ્હારે વિષે તહારત હૈ. (મુસ્લિમ)

તલે બે કરારી કા આલમ હો, જહન્નમ કી ખિડકી ખુલી હુઈ હો, આગ સુલગ રહી હો, સાંપ ઓર બિચ્છૂ દફન હોને વાલે કે બદન પર લિપટે હુએ હોં ઓર ઐસી ચીખો પુકાર મચી હુઈ હો જિસે હમ સુન નહીં સકતે. મેરે આકા આ'લા હઝરત حَمَّةُ اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ ફરમાતે હેં :

હાએ ગાફિલ વોહ ક્યા જગહ હૈ જહાં	પાંચ જાતે હેં ચાર ફિરતે હેં
બાએ રસ્તે ન જા મુસાફિર સુન	માલ હૈ રાહમાર ¹ ફિરતે હેં
જાગ સુનસાન બન હૈ રાત આઈ	ગુર્ગ ² બહરે શિકાર ફિરતે હેં

નફસ યેહ કોઈ ચાલ હૈ ઝાલિમ

જૈસે ખાસે બિજાર ફિરતે હેં

سَلُّوْا عَلٰى الْحَبِيْبِ ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّدٍ

એક દિન મરના હૈ આખિર મૌત હૈ

એ આશિકાને રસૂલ ! ઈન કબ્રિસ્તાનોં કી વીરાનિયોં કો દેખિયે ઓર ગૌર કીજિયે કે ક્યા જીતે જી હમ મેં સે કોઈ કિસી કબ્રિસ્તાન મેં એક રાત હી તન્હા ગુઝાર સકતા હૈ ? શાયદ કોઈ ભી હિમ્મત ન કર પાએ, તો જબ જીતે જી તન્હા રહને સે ઘબરાતે હેં તો મરને કે બા'દ જબ કે તમામ દોસ્ત વ અહબાબ ઓર સારે અઝીઝો અકારિબ છૂટ ચુકે હોંગે, અક્લ સલામત હોગી, સબ કુદ્ર દેખ ઓર સુન રહે હોંગે મગર હિલને જુલને ઓર બોલને સે ભી કાસિર હોંગે ઐસે હોશરુબા હાલાત મેં અંધેરી કબ્ર કે અન્દર તન્હા ક્યૂંકર રહ પાએંગે ! આહ ! અપના હાલ તો યેહ હૈ કે અગર આસાઈશોં સે ભરપૂર ખૂબ સૂરત એર કન્ડીશન્ડ કોઠી મેં ભી તન્હા કેદ કર દિયા જાએ તો ઘબરા જાએ !

કરમાને મુસ્તકા : طلى اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلم : तुम जहां भी हो मुज पर दुरद पढो के तुम्हारा दुरद मुज तक पछोचता है. (طبرانی)

અંધેરી રાત હૈ ગમ કી ઘટા ઇસ્થાં કી કાલી હૈ દિલે બેકસ કા ઇસ આફત મેં આકા તૂ હી વાલી હૈ

ઉતરતે ચાંદ ઢલતી ચાંદની જો હો સકે કર લે અંધેરા પાખ¹ આતા હૈ યેહ દો દિન કી ઉજાલી હૈ

અંધેરા ઘર, અકેલી જાન, દમ ઘુટતા, દિલ ઉક્તાતા ^{عزوجل} ખુદા કો યાદ કર પ્યારે વોહ સાઅત આને વાલી હૈ

ન ચૌકા દિન હૈ ઢલને પર તેરી મન્જિલ હુઈ ખોટી અરે ઓ જાને વાલે નીંદ યેહ કબ કી નિકાલી હૈ

رحمة الله تعالى عليه

રઝા મન્જિલ તો જૈસી હૈ વોહ ઇક મેં ક્યા સભી કો હૈ

તુમ ઇસ કો રોતે હો યેહ તો કહો યાં હાથ ખાલી હૈ

મીઠે મીઠે ઇસ્લામી ભાઈયો ! યકીન માનિયે ! કબ્રિસ્તાન

મેં દફન હોને વાલે આજ હમે ઝબાને હાલ સે નસીહત કર રહે હેં :

“ઐ ગાફિલ ઇન્સાનો ! યાદ રખો ! કલ હમ ભી વહીં (યા’ની દુન્યા મેં) થે જહાં આજ તુમ હો ઔર કલ તુમ ભી યહીં (યા’ની

કબ્ર મેં) આ પહોંચોગે જહાં આજ હમ હેં.” યકીનન જો દુન્યા મેં

પૈદા હુવા ઉસે મરના હી પડેગા, જિસ ને ઝિન્દગી કે ફૂલ યુને ઉસે

મૌત કે કાંટે ને ઝરૂર ઝખ્મી ક્રિયા, જિસ ને ખુશિયોં કા ગન્જ

(યા’ની ખજાના) પાયા ઉસે મૌત કા રન્જ મિલ કર રહા !

હમ દુન્યા મેં તરતીબ વાર આએ હેં લેકિન.....

મીઠે મીઠે ઇસ્લામી ભાઈયો ! હમ ઇસ દુન્યા મેં એક

તરતીબ સે આએ ઝરૂર હેં યા’ની યૂં કે પહલે દાદા ફિર બાપ

ફિર બેટા ફિર પોતા લેકિન મરને કી તરતીબ ઝરૂરી નહીં, બૂઢા

1: અંધેરા પાખ યા’ની મહીને કે આખિરી પન્દરહ દિન

કરમાને મુસ્તકા صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर इस मर्तबा दुःखे पाक पढा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर सो रहमतें नازل करमाता है. (जब)

દાદા ઝિન્દા હોતા હૈ મગર શીર ખ્વાર યા'ની દૂધ પીતા પોતા મૌત કે ઘાટ ઉતર જાતા હૈ, કિસી કે નાનાજાન હયાત હોતે હૈં મગર અમ્મીજાન દાગે મુફ્ફા-ર-કત (યા'ની જુદાઈ કા સદમા) દે જાતી હૈં. હમ મેં સે કિસી કે ઘર સે ઉસ કે ભાઈ કા જનાઝા ઉઠા હોગા, કિસી કી માં ને નિગાહોં કે સામને દમ તોડા હોગા, કિસી કે બાપ ને મૌત કો ગલે લગાયા હોગા, કિસી કા જવાન બેટા હાદિસે કા શિકાર હો કર મૌત સે હમ કનાર હુવા હોગા, કિસી કી દાદીજાન મુલ્કે અદમ યા'ની કબ્રિસ્તાન રવાના હુઈ હોંગી તો કિસી કી નાનીજાન ને કૂચ કી હોગી. અપને ફૌત હો જાને વાલે ઈન અઝીઝો અકરિબા કી તરહ એક દિન હમ ભી અયાનક યેહ દુન્યા છોડ જાએંગે

દિલા ગાફિલ ન હો યક દમ યેહ દુન્યા છોડ જાના હૈ બગીચે છોડ કર ખાલી ઝમી અન્દર સમાના હૈ
તેરા નાઝુક બદન ભાઈ જો લેટે સૈજ ફૂલોં પર યેહ હોગા એક દિન બે જાં ઈસે કીઝોં ને ખાના હૈ
તૂ અપની મૌત કો મત ભૂલ કર સામાન ચલને કા ઝમી કી ખાક પર સોના હૈ ઈંટોં કા સિરહાના હૈ
ન બૈલી હો સકે ભાઈ ન બેટા બાપ તે માઈ તૂ ક્યૂં ફિરતા હૈ સૌદાઈ અમલ ને કામ આના હૈ
કહાં હૈ ઝોરે નમઝૂદી! કહાં હૈ તપ્ને ફિરઔની! ગએ સબ છોડ યેહ ફાની અગર નાદાન દાના હૈ
અઝીઝા યાદ કર જિસ દિન કે ઈઝરાઈલ આએંગે ન જાવે કોઈ તેરે સંગ અકેલા તૂ ને જાના હૈ
જહાં કે શગલ મેં શાગિલ ખુદા કે ઝિક સે ગાફિલ કરે દા'વા કે યેહ દુન્યા મેરા દાઈમ ઠિકાના હૈ

ગુલામ ઈક દમ ન કર ગફલત હયાતી પે ન હો ગુરા

ખુદા કી યાદ કર હર દમ કે જિસ ને કામ આના હૈ

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

इरमाने मुस्तफ़ा رضي الله تعالى عليه وآله وسلم : जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुझ पर दुइद शरीफ़ न पड़े तो वोह लोगो में से क़ब्रस तरौन शॉफ़स है. (अब्दुलक़ादिर)

पडले औसी कोई रात नही गुज़ारी होगी

उज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رضي الله تعالى عنه
 ईशाद इरमाते हैं : क्या मैं तुम्हें उन दौ दिनो और दौ रातो के बारे में न बताऊँ ! (1) अेक दिन वोह है जब अद्लाह عَزَّوَجَلَّ की तरफ़ से आने वाला तेरे पास रिजाअे ईलाही عَزَّوَجَلَّ का मुज़्दा (या'नी ज़ुश ज़बरी) ले कर आअेगा या उस की नाराज़ी का पैगाम. और (2) दूसरा दिन वोह जब तू अपना नामअे आ'माल लेने के लिये बारगाहे ईलाही عَزَّوَجَلَّ में डालिरे होगा और वोह नामअे आ'माल तेरे दाअे (या'नी सीधे) हाथ में दिया जाअेगा या बाअे (या'नी उलटे) में. (और दौ रातो में से) (1) अेक रात वोह है जो मय्यित अपनी क़ब्र में गुज़ारेगी के ईस से पडले उस ने औसी रात क़बी नही गुज़ारी होगी. और (2) दूसरी रात वोह है जिस की सुब्ह को क़ियामत का दिन होगा और इर उस के बा'द कोई रात नही आअेगी.

(شُعَبُ الْإِيمَانِ ج ٧ ص ٣٨٨ حديث ٦٩٧ ١٠ دار الكتب العلمية بيروت)

आ'ला رضمة الله تعالى عليه उज़रत की वसियत

अै आज के जिन्दो और कल के मुर्दो, अै इना हो जाने वालो, अै कमजोरो, अै ना तुवानो, अै ज़रिफ़ो, अै बय्यो, अै जवानो, अै बूढो ! यकीनन क़ब्र की पडली रात निहायत अहम रात है मेरे आका आ'ला उज़रत, ईमामे अहले सुन्नत, आशिके माहे नुबुव्वत, वलिये ने'मत, अज़ीमुल अ-र-कत, अज़ीमुल मर्तअत, परवानअे शम्अे रिसालत, मुजदिदे दीनो मिल्लत, डामिये सुन्नत, माडिये बिद्अत, पैकरे कुनूनो डिक्मत, आलिमे

કરમાને મુસ્તફા ﷺ : उस शप्स की नाक भाक आवुद हो जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुज पर दुरद पाक न पढे. (1/4)

શરીઅત, પીરે તરીકત, બાઈસે ખૈરો બ-ર-કત હઝરતે અલ્લામા મૌલાના અલહાજ અલ હાફિઝ અલ કારી શાહ ઈમામ અહમદ રઝા ખાન عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن ને બહુત બડે વલિયુલ્લાહ ઔર ઝબર દસ્ત આશિકે રસૂલ હોને કે બા વુજૂદ યેહ વસિયત ફરમાઈ કે : (બા'દે દફન તલ્કીન કરને કે બા'દ) ડેઢ ઘન્ટા મેરે મુવા-જહા (યા'ની કબ્ર કે યેહરે વાલે હિસ્સે) મેં દુરૂદ શરીફ ઐસી આવાઝ સે પઢતે રહેં કે મેં સુનૂં. ફિર મુઝે અર-હમુરાહિમીન કે સિપુર્દ કર કે ચલે આએ, ઔર અગર તકલીફ ગવારા હો સકે તો ત્રીન શબાના રોઝ કામિલ (યા'ની મુકમ્મલ ત્રીન દિન ઔર ત્રીન રાતે) પહરે કે સાથ દો અઝીઝ યા દોસ્ત મુવા-જહા મેં કુરઆન શરીફ વ દુરૂદ શરીફ ઐસી આવાઝ સે બિલા વક્ફા પઢતે રહેં કે અલ્લાહ ﷻ યાહે તો ઈસ નએ મકાન મેં દિલ લગ જાએ. (હયાતે આ'લા હઝરત, હિસ્સએ સિવુમ સ. 291, મક-ત-બતુલ મદીના બાબુલ મદીના કરાયી)

સગે મદીના કી વસિયત

ﷻ અપને આકા આ'લા હઝરત علیه رَحْمَةُ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ કી પૈરવી કરતે હુએ સગે મદીના ﷻ ને ભી ઈસી તરહ કી વસિયત કર રખી હૈ યુનાન્યે દા'વતે ઈસ્લામી કે ઈશાઅતી ઈદારે મક-ત-બતુલ મદીના કે મત્બૂઆ 436 સફહાત પર મુશ્તમિલ, “રસાઈલે અત્તારિય્યા” મેં શામિલ રિસાલે “મ-દની વસિયત નામા” સફહા 394 પર હૈ : “હો સકે તો મેરે અહલે મહબ્બત મેરી તદફીન કે બા'દ 12 રોઝ તક, યેહ ન હો સકે તો કમ અઝ કમ 12 ઘન્ટે હી સહી મેરી કબ્ર પર હલ્કા ક્રિયે રહેં ઔર ઝિક્રો દુરૂદ ઔર તિલાવત વ ના'ત સે મેરા દિલ બહલાતે રહેં ﷻ નઈ જગહ મેં દિલ લગ હી જાએગા, ઈસ દૌરાન ભી ઔર હમેશા નમાઝે બા જમાઅત કા એહતિમામ રખેં.”

ફરમાને મુસ્તફા صلى الله تعالى عليه وآله وسلم : जिस ने मुझ पर रोजे जुबुआ दो सो बार दुबेदे पाक पढा उसि के दो सो साल के गुनाह मुआक करो। (क़ुरआन)

મહબૂબે બારી કી અશકબારી

હમારે બપ્શે બપ્શાએ આકા, હમેં બપ્શવાને વાલે મીઠે મીઠે મક્કી મ-દની મુસ્તફા, શાફેએ યૌમે જઝા صلى الله تعالى عليه وآله وسلم કા કબ્ર કે તાઅલ્લુક સો ખૌફે ખુદા عَزَّوَجَلَّ મુલા-હઝા હો. યુનાન્થે હઝરતે સચ્ચિદુના બરાઅ બિન આઝિબ رضى الله تعالى عنه ફરમાતે હેં, હમ સરકારે મદીના صلى الله تعالى عليه وآله وسلم કે હમરાહ એક જનાઝે મેં શરીક થે તો આપ صلى الله تعالى عليه وآله وسلم કબ્ર કે કનારે પર બૈઠે ઔર ઈતના રોએ કે મિટ્ટી ભીગ ગઈ. ફિર ફરમાયા : ઈસ કે લિયે તય્યારી કરો. (سُنَنِ ابْنِ مَاجَه ج ٤ ص ٤٦٦ حديث ٤١٩٥ دارالمعرفة بيروت)

સોયા કિયે ના-બકાર બન્દે

www.dawateislami.net

રોયા કિયે ઝાર ઝાર આકા

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ عَلَى مُحَمَّدٍ

આખિરત કી પહલી મન્ઝિલ કબ્ર હૈ

અમીરુલ મુઅમિનીન હઝરતે સચ્ચિદુના ઉસ્માને ગની رضى الله تعالى عنه જબ કિસી કી કબ્ર પર તશરીફ લાતે તો ઈસ કદર આંસૂ બહાતે કે આપ رضى الله تعالى عنه કી દાઢી મુબારક તર હો જાતી. અર્ઝ કી ગઈ : જન્નત વ દોઝખ કા તઝકિરા કરતે વક્ત આપ નહીં રોતે મગર કબ્ર પર બહુત રોતે હેં ઈસ કી વજહ ક્યા હૈ? ફરમાયા : મેં ને નબિય્યે અકરમ, નૂરે મુજસ્સમ, શાહે બની આદમ صلى الله تعالى عليه وآله وسلم સે સુના હૈ : આખિરત કી સબ સે પહલી મન્ઝિલ કબ્ર હૈ, અગર કબ્ર વાલે ને ઈસ સે નજાત પાઈ તો બા'દ કા

करमाने मुस्तक़ा : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुज़ पर दुःख शरीक़ पढो अद्लाह तुम पर रहमत भेजेगा. (अबुअयूब)

मुआ-मला ँस से आसान है और अगर ँस से नज़ात न पाँ
तो बा'द का मुआ-मला ज़ियादा सप्त है.

(سُنَنِ ابْنِ مَاجَه، ج ٤ ص ٥٠٠ حَدِيث ٤٢٦٧)

जनाज़ा भामोश मुबद्लिग है

भीठे भीठे ँस्लामी भाँयो ! देखा आप ने जुन्नूरैन,
जामिउल कुरआन उरते सय्यिदुना उस्मान ँबने अफ़्फ़ान
رضى الله تعالى عنه का भौक़े पुढाअे रहमान غَزْوَجَلُّ ! आप رضى الله تعالى عنه
अ-श-रअे मुबशरह या'नी उन दस पुश नसीब सहाबअे किराम
مِنْهُمْ الرِّضْوَانُ में से हैं जिन्हें अद्लाह के उबीब, उबीबे लबीब
صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने अपनी ज़बाने उक़े तरजुमान से पुसूसी
तौर पर जन्नती डोने की बिशारत दी थी, ँन से मा'सूम किरिश्ते
डया करते थे. ँस के बा वुजूद क़ब्र की डोल नाकियों, वड़शतों,
तन्हाँयों और अंधेरियों के बारे में बे ँन्तिहा भौक़उदा रहा
करते थे और अेक डम हैं के अपनी क़ब्र को यकसर भूले हुअे हैं,
रोज़ बरोज़ लोगों के जनाजे उठते देपने के बा वुजूद येड नडीं
सोयते के अेक दिन डमारा जनाजा त्नी उठ डी ज़ाअेगा, यकीनन
येड जनाजे डमारे लिये भामोश मुबद्लिग की हैसियत रपते
हैं. वोड जो कुछ ज़बाने डाल से कड रहे डोते हैं उस को क़िसी ने
ँस तरड नज़्म किया है :

जनाज़ा आगे आगे कड रहा है अै जडं वावो

मेरे पीछे यले आओ तुम्हारा रहनुमा मैं डूं

अंधेरा काट भाता है

अै आशिकाने रसूल ! अफ़सोस सद करोड अफ़सोस ! के
डम दूसरों को क़ब्र में उतरता हुवा देपते हैं मगर येड भूल ज़ते

કરમાને મુસ્તફા صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : મુઝ પર કસરત સે દુરુદે પાક પઢો બેશક તુમ્હારા મુઝ પર દુરુદે પાક પઢના તુમ્હારે ગુનાહો કે લિયે મગફિરત હૈ. (મહાનિબ)

હૈં કે એક દિન હમં ભી કબ્ર મેં ઉતારા જાએગા. આહ ! હમારી હાલત યેહ હૈ કે રાત બિજલી ફેલ હો જાએ તો દિલ ઘબરાતા ખુસૂસન અકેલે હોં તો બહુત ખૌફ આતા ઔર અંધેરા કાટ ખાતા હૈ, હાએ ! હાએ ! ઈસ કે બા વુજૂદ કબ્ર કે હોલનાક ઘુપ અંધેરે કા કોઈ એહસાસ નહીં. નમાઝેં હમ સે નહીં પઢી જાતીં, ૨-મઝાનુલ મુબારક કે રોઝે હમ સે નહીં રખે જાતે, ફર્ઝ હોને કે બા વુજૂદ ઝકાત પૂરી હમ સે નહીં દી જાતી, માં બાપ કે હુકૂક હમ અદા નહીં કર પાતે, આહ ! રાત દિન ગુનાહોં મેં ગુઝર રહે હૈં, યકીનન મૌત કા એક વક્ત મુકરર હૈ ઉસે ટાલના મુશ્કિન નહીં, અગર ઈસી તરહ ગુનાહ કરતે કરતે યકાયક મૌત કા પૈગામ આ પહોંચા ઔર હમં કબ્ર કે ગઢે મેં ડાલ દિયા ગયા તો ન જાને હમારી કબ્ર કી પહલી રાત કેસી ગુઝરે !

યાદ રખ હર આન આબિર મૌત હૈ બન તૂ મત અજ્ઞાન આબિર મૌત હૈ
મરતો જાતો હૈં હઝારોં આદમી આકિલો નાદાન આબિર મૌત હૈ
ક્યા ખુશી હો દિલ કો ચન્દે ઝીસ્ત સે ગમઝદા હૈ જાન આબિર મૌત હૈ
મુલકે ફાની મેં ફના હર શૈ કો હૈ સુન લગા કર કાન આબિર મૌત હૈ

બારહા ઈલમી તુઝે સમઝા યુકે

માન યા મત માન આબિર મૌત હૈ

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

આલીશાન કોઠી કા ઈબ્રત નાક વાકિઆ

ઈન્સાન બહુત લમ્બે લમ્બે મન્સૂબે બનાતા હૈ મગર ઉસ

इरमाने मुस्तफ़ा صلى الله عليه وآله وسلم : जो मुज़ पर अक दुइद शरीक पढता है अल्वाह उस् के लिये अक कीरात अज़र लिभता है और कीरात उदुद पछाड जितना है. (Bihar)

की इस बात की तरफ़ तवज्जोह ही नहीं होती के लगाम किसी और के हाथ में है, जब यकायक लगाम भियेगी और मरना पड जायेगा तो सब किया कराया धरा का धरा रह जायेगा युनान्ये कहा जाता है : “मदीनतुल औदिया मुलतान” का अक नौ जवान धन कमाने की धुन में अपने वतन, शहर, जानदान वगैरा से दूर किसी दूसरे मुल्क में जा बसा. ખૂબ માલ કમાતા ઔર ઘર વાલોં કો ભિજવાતા, બાહમ મશવરે સે આલીશાન કોઠી બનાને કા તૈ પાયા. येह नौ जवान सालहा साल तक रकम भिजता रहा, घर वाले मकान बनवाते और उस को ખૂબ સજવાતે રહે, યહાં તક કે અઝીમુશ્શાન મકાન તય્યાર હો ગયા. येह नौ जवान जब वतन वापस आया तो उस अजीमुश्शान कोठी में रिहाईश के लिये तय्यारियां उइज़ पर थीं मगर आह ! मुकद्दर, के उस आलीशान मकान में मुन्तकिल होने से तकरीबन अक हफ़ता कबल ही उस नौ जवान का इन्तिकाल हो गया और वोह अपने रोशनियों से जग-मगाते आलीशान मकान के बजाये घुप अंधेरी कब्र में मुन्तकिल हो गया.

जहां में हैं इब्रत के दर सू नुमूने मगर तुज को अन्धा किया रंगो भू ने कभी गौर से भी येह देखा है तूने जो आबाद थे वोह मकां अब हैं सूने

जगह जो लगाने की दुन्या नहीं है

येह इब्रत की जा है तमाशा नहीं है

दुन्या के मतवाले

अइसोस ! हमारी अक्सरियत आज दुन्या की मतवाली और झिंके आभिरत से ખાલી હૈ, હમ મેં સે કુછ તો વોહ હૈં જો ફાની દુન્યા કી લઝઝતોં કે બાઈસ મસરૂર વ શાદાં, ઝવાલ વ ફના

करमाने मुस्तफा صلى الله تعالى عليه وآله وسلم : जिस ने किताब में मुज पर दूइटे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा
किरिशते उस के बिधे ईस्तिग्कार करते रहेंगे. (अ/१)

से बे भौंफ़, मौत के तसव्युर से ना आशना, लज़्जाते दुन्या में
बद मस्त हैं तो भा'ज वोह हैं जो ईस दारे ना पाअेदार में
यकायक मौत से हम कनार होने के अन्देशे से ना बलद, सडूलतों
और आसाईशों के हुसूल में ईस कदर मगन हो गअे के कब्र के
अंधेरो, वडूशतों और तन्हाईयों को भूल गअे. आह ! आज
हमारी सारी तुवानाईयां सिर्फ़ व सिर्फ़ दुन्यवी जिन्दगी ही बेहतर
बनाने में सई हो रही हैं, आभिरत की बेहतरि के हुसूल की झिक
बहुत कम दिभाई देती है. जरा गौर तो कीजिये के ईस दुन्या में
कैसे कैसे मालदार लोग गुजरे हैं जो दौलत व हुकूमत, ज़ाहो
इश्मत, अहलो ईयाल की आरिजी उन्सिथ्यत, दोस्तों की वक्ती
मुसा-इबत और पुद्दाम की पुशा-मदाना पिदमत के त्रम में
कब्र की तन्हाई को भूले हुअे थे. मगर आह ! यकायक इना का
बादल गरज, मौत की आंधी यली और दुन्या में ता देर रहने की
उन की उम्मीदें भाक में मिल कर रह गई, उन के मसरतों और
शाहमानियों से हंसते बसते घर मौत ने वीरान कर दिये. रोशानियों
से जग-मगाते महल्लात व कुसूर से उठा कर उन्हें घुप अंधेरी
कुबूर में मुन्तकिल कर दिया गया. आह ! वोह लोग कल तक
अहलो ईयाल की रौनकों में शाहमान व मसूर थे और आज
कुबूर की वडूशतों और तन्हाईयों में मगभूम व रन्जूर हैं.

अजल ने न किरा ही छोडा न दारा ईसी से सिकन्दर सा झतेह भी डारा
उर ईक लेके क्या क्या न हसरत सिधारा पडा रह गया सब यूंही ठाठ सारा

जगह ज लगाने की दुन्या नहीं है

येह ईब्रत की ज़ा है तमाशा नहीं है

ફરમાને મુસ્તકા طی اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلم : جس نے મુઝ પર એક બાર દુરૂદે પાક પઢા અલ્લાહ (عَزَّوَجَلَّ) ઉસ પર દસ રહમતો ભેજતા (مسلم).

દુન્યા કા ધોકા

અફસોસ હૈ ઉસ પર, જો દુન્યા કી નૈરંગિયાં દેખને કે બા વુજૂદ ભી ઈસ કે ધોકે મેં મુબ્તલા રહે ઔર મૌત સે યકસર ગાફિલ હો જાએ. વાકેઈ જો દુન્યાવી જિન્દગી કે ધોકે મેં પડ કર અપની મૌત ઔર કબ્રો હશર કો ભૂલ જાએ ઔર અલ્લાહ તઆલા કો રાઝી કરને કે લિયે અમલ ન કરે, નિહાયત હી કાબિલે મઝમ્મત હૈ. ઈસ ધોકે સે હમેં ખબરદાર કરતે હુએ હમારા પરવર્દ ગાર عَزَّوَجَلَّ પારહ 22 સૂ-રતુલ ફાતિર કી આયત નમ્બર 5 મેં ઈર્શાદ ફરમાતા હૈ :

يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ
فَلَا تَعْرَبْكُمْ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا
وَلَا يَعْزُبْكُمْ بِاللَّهِ الْعُرُومُ ①

(બ ૨૨, الفاطر: ૦૫)

તર-જ-મએ કન્જુલ ઈમાન : ઐ લોગો ! બેશક અલ્લાહ (عَزَّوَجَلَّ) કા વા'દા સચ હૈ તો હરગિઝ તુમ્હેં ધોકા ન દે દુન્યા કી જિન્દગી ઔર હરગિઝ તુમ્હેં અલ્લાહ (عَزَّوَجَلَّ) કે હુકમ પર ફરેબ ન દે વોહ બડા ફરેબી (યા'ની શૈતાન).

ઐ આશિકાને રસૂલ ! ઔર મેરે મીઠે મીઠે ઈસ્લામી ભાઈયો ! યકીનન જો મૌત ઔર ઈસ કે બા'દ વાલે મુઆ-મલાત સે સહીહ મા'નોં મેં આગાહ હૈ વોહ દુન્યા કી રંગીનિયોં ઔર ઈસ કી આસાઈશોં કે ધોકે મેં નહીં પડ સકતા. ક્યા આપ ને કભી કિસી કો મરને વાલે કી કબ્ર મેં રખને કે લિયે ફર્નીયર તય્યાર કરવાતે હુએ, કબ્ર મેં એર કન્ડીશનર લગવાતે હુએ, રકમ રખને કે લિયે તિજોરી બનવાતે હુએ, ખેલોં મેં જીતે હુએ કપ ઔર દુન્યવી કામ્યાબિયોં કી અસ્નાદ સજાને કે લિયે અલમારી બનવાતે હુએ દેખા હૈ ? નહીં દેખા હોગા ઔર યેહ કામ શરઅન દુરુસ્ત ભી નહીં

करमाने मुस्तक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो शम्स मुज पर दुर्रहे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्त का रास्ता भूल गया. (طبرانی)

हैं, तो जब सब कुछ यहीं छोड़ कर जाना है तो येह उत्रियां हमारे किस काम की ? जिस दौलत के लिये सारी जिन्दगी मेहनत व मशक़त करते हैं वोह हमारी क्या मदद करेगी ? जिस मन्सब की बिना पर अकउ कूँ करते रहे वोह आभिर हमारे क्या काम आयेगा ? भीठे भीठे इस्लामी भाईयो ! अब भी वक्त है, होश में आईये और कब्रों आभिरत की तय्यारी कर लीजिये.

दुनिया में मुसाफ़िर बन कर रहो

उठरते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन उमर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا से रिवायत है के हुजुरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़लाक صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने मेरा कन्या पकउ कर इशार्ह इरमाया : “दुनिया में यूँ रहो गोया तुम मुसाफ़िर हो.” उठरते सय्यिदुना इब्ने उमर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا इरमाया करते : जब तू शाम करे तो आने वाली सुब्ह का इन्तिज़ार मत कर और जब सुब्ह करे तो शाम का मुन्तज़िर न रह और डालते सिद्धत में बीमारी के लिये और जिन्दगी में मौत के लिये तय्यारी कर ले.

(صحيح بخارى ج ٤ ص ٢٢٣ حديث ٦٤١٦ دار الكتب العلمية بيروت)

दुनिया, आभिरत की तय्यारी के लिये मजसूस है

उठरते सय्यिदुना उस्माने गनी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने सभ से आभिरी खुत्बा जो इशार्ह इरमाया उस में येह भी है : अल्लाह तआला ने तुम्हें दुनिया सिर्फ़ इस लिये अता इरमाई है के तुम इस के जरीअे आभिरत की तय्यारी करो और इस लिये अता नहीं इरमाई के तुम इसी के हो कर रह जाओ, बेशक़ दुनिया इानी और आभिरत बाकी है. तुम्हें इानी (दुनिया) कहीं भलका कर

ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुइदे पाक न पढा तबकीक वोह बढभप्त हो गया. (Urdu)

બાકી (આખિરત) સે ગાફિલ ન કર દે, ફના હો જાને વાલી દુન્યા કો બાકી રહને વાલી આખિરત પર તરજીહ ન દો ક્યૂંકે દુન્યા મુન્કતેઅ હોને વાલી હૈ ઓર બેશક અલ્લાહ ﷻ કી તરફ લૌટના હૈ. અલ્લાહ ﷻ સે ડરો ક્યૂંકે ઉસ કા ડર ઉસ કે અઝાબ કે લિયે (રોક ઓર) ઢાલ ઓર ઉસ ﷻ તક પહોંચને કા ઝરીઆ હૈ.

(دَمُ الدُّنْيَا مَوْسُوعَةُ ابْنِ أَبِي الدُّنْيَا هـ ص ۸۳ رقم ۱۶۶ المكتبة العصرية بيروت)

હે યેહ દુન્યા બે વફા આખિર ફના

ન રહા ઈસ મેં ગદા ન બાદશહ

ઐ આશિકાને રસૂલ ઓર મેરે મીઠે મીઠે ઈસ્લામી ભાઈયો ! ઈસ દુન્યા કી હૈસિયત એક ગુઝર ગાહ (યા'ની રાસ્તે) કી સી હૈ જિસે તૈ કરને કે બા'દ હી હમ મન્જિલ તક પહોંચ સકતે હૈં, અબ વોહ મન્જિલ જન્નત હોગી યા જહન્નમ ! ઈસ કા ઈન્હિસાર ઈસ બાત પર હૈ કે હમ ને યેહ સફર કિસ તરહ તૈ કિયા ! અલ્લાહ વ રસૂલ ﷻ ﷻ ﷻ કી ઈતાઅત ગુઝારી કરતે હુએ યા ના ફરમાન બન કર ? લિહાઝા અગર હમ જન્નત કે ઈન્આમાત લેના ઓર જહન્નમ કે અઝાબાત સે બચના યાહતે હૈં તો હમેં “અપની ઓર સારી દુન્યા કે લોગોં કી ઈસ્લાહ કી કોશિશ કરની હોગી.”

અલ્લાહ કરે દિલ મેં ઉતર જાએ મેરી બાત

મયિત કા એ'લાન

સરકારે મદીના, સુલ્તાને બા કરીના, કરારે કલ્બો સીના, ફેઝ ગન્જના ﷻ ﷻ ﷻ ને ઈશાદ ફરમાયા : ઉસ ઝાત કી કસમ જિસ કે કબ્જાએ કુદરત મેં મેરી જાન હૈ અગર લોગ ઉસ કા

इरमाने मुस्तका صلى الله تعالى عليه واله وسلم : जिस ने मुज पर दस भरतभा सुबह और दस भरतभा शाम दुइदे पाक पढा उसे
क्रियामत के दिन मेरी शकात मिलेगी. (सुअह)

(या'नी भरने वाले का) ठिकाना देण लें और उस का कलाम सुन लें तो मुर्दे को तूल जाअें और अपनी जानों पर रोअें. जब मुर्दे को तप्त पर रण कर उठाया जाता है उस की रूह इडइडा कर तप्त पर बैठ कर निदा करती है : **अै मेरे अहलो ईयाल ! हुन्या तुम्हारे साथ ईस तरह न भेले जैसा के ईस ने मेरे साथ भेला, मैं ने हलाल और गैरे हलाल माल जम्अ किया और फिर वोह माल दूसरों के लिये छोड आया. ईस का नफ्अ उन के लिये है और ईस का नुकसान मेरे लिये, पस जो कुछ मुज पर गुजरी है ईस से डरो (या'नी ईध्रत हासिल करो).** (التذكرة للقرطبي ص ٧٦ دار الكتب العلمية بيروت)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

मुर्दे की पुकार

हजरते सय्यिहुना अबू सईद जुदरी رضى الله تعالى عنه से रिवायत है के आ-तमुल मुर-सलीन, रहमतुल्लिल आ-लमीन صلى الله تعالى عليه واله وسلم का इरमाने ईध्रत निशान है : जब जनाजा तय्यार हो जाता है और लोग उसे अपने कन्धों पर उठाते हैं, अगर वोह अरुहा है तो कहता है मुझे जल्दी ले चलो, अगर वोह बुरा होता है तो अपने रिश्तेदारों से कहता है : **हाअे ! मुझे तुम कहां लिये जा रहे हो ! ईन्सान के ईलावा हर अेक चीज उस की आवाज सुनती है, अगर ईन्सान उसे सुन ले तो भेडोश हो जाअे.** (सहीह बुभारी, जि. 1, स. 465, हदीस : 1380)

कब्र की पुकार

हजरते सय्यिहुना अबुल हज्जज सुमाली رضى الله تعالى عنه

इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुइइ शरीक़ न पढा उस ने ज़का की.
(अल-बिदाय)

से रिवायत है, सरकारे मदीना, सुल्ताने आ करीना, करारे कल्बो सीना, कैज़ गन्जना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने ईशार्द इरमाया : जब मय्यित को क़ब्र में उतार दिया जाता है तो क़ब्र उस से भिताब करती है : अै आदमी तेरा नास हो ! तूने किस लिये मुझे इरामोश (या'नी लुला) कर रभा था ? क्या तुझे ईतना ल्मी पता न था के मैं इितनों का घर हूं, तारीकी का घर हूं, इरि तू किस बात पर मुज़ पर अकडा अकडा इरिता था ? अगर वोह मुर्दा नेक बन्दे का हो तो अेक गैबी आवाज़ क़ब्र से क़हती है : अै क़ब्र ! अगर येह उन में से हो ज़ो नेकी का हुक़म करते रहे और बुराई से मन्अ करते रहे तो इरि ! (तेरा सुलूक क्या होगी ?) क़ब्र क़हती है : अगर येह बात हो तो मैं ईस के लिये गुलज़ार बन जाती हूं. युनान्चे इरि उस शप्स का बदन नूर में तब्दील हो जाता है और उस की इह रब्बुल आ-लमीन عَزَّوَجَلَّ की आरगाह की तरफ़ परवाज़ कर जाती है.
(مُسْنَدُ أَبِي يَتْلَى ج ٦ ص ٦٧ حديث ٦٨٣٥ دارالكتب العلمية بيروت)

अै आशिकाने रसूल और भीठे भीठे ईस्लामी ल्माईयो ! सोचिये तो सही उस वक्त जबके क़ब्र में तन्हा रह गये होंगे, धबराहट तारी होगी, न कहीं ज़ा सकते होंगे न किसी को बुला सकते होंगे और ल्माग निकलने की ल्मी कोई सूरत न होगी. उस वक्त क़ब्र की कलेज़ा इाड पुकार सुन कर क्या गुज़रेगी !

क़ब्र रोजाना येह करती है पुकार मुज़ में हें कीडे मकोडे ओ शुमार
याद रभ ! मैं हूं अंधेरी कोठी मुज़ में सुन वइशत तुजे होगी बडी
मेरे अन्दर तू अकेला आयेगा हां मगर आ'माल लेता आयेगा

इरमाने मुस्तक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुज़ पर रोज़े जुमुआ दुरुद शरीफ़ पढ़ेगा में डियामत के दिन उस की शक़ाअत क़स्मिल... (ज़ुबैर)

तेरा इन तेरा हुनर ओडदा तेरा काम आओगा न सरमाया तेरा
दौलते दुन्या के पीछे तू न जा आभिरत में माल का है काम क्या
दिल से दुन्या की महल्लत दूर कर दिल नबी के ईशक से मा'मूर कर
लन्दनो पेरिस के सपने छोड दे

अस मदीने ही से रिश्ता जोड ले

जन्नत का भाग या जहन्नम का गढा !

अद्लाह عَزَّوَجَلَّ के महल्लूब, दानाअे गुयूब, मुनज़्ज़लुन
अनिल उयूब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इरमाने ईब्रत निशान है :
“क़ब्र या तो जन्नत के भागों में से अेक भाग है या जहन्नम के
गढों में से अेक गढा.” (سُنَنِ تَرْمِذِي ج ٤ ص ٢٠٨ حديث ٢٤٦٨ دارالفكر بيروت)
गोरे नेकां भाग डोगी भुलद का

मुजरिमों की क़ब्र दोज़भ का गढा

इरमां भरदार पर क़ब्र की रहमत

भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! नमाज़ों और सुन्नतों पर
अमल करने वालों के लिये क़ब्र में राहतें और बे नमाज़ियों, और
गुनाहोंं भरे गैर शर-ई इशान करने वालों के लिये आइतें ही
आइतें डोंगी, युनान्ये डज़रते अदलामा जलालुद्दीन सुयूती शाईई
عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكُوفِي इरमाते हैं : डज़रते सय्यिदुना उबैद बिन उमैर
رضى اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है, क़ब्र मुर्दे से कलती है के अगर तू
अपनी जिन्दगी में अद्लाह عَزَّوَجَلَّ का इरमां भरदार था तो आज
में तुज़ पर रहमत कइंगी और अगर तू अपनी जिन्दगी में

इरमाने मुस्तक़ा كَلْبُ عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَالْوَالِدُ وَالْوَالِدَاتُ وَالْأَقْرَبُونَ وَلِلْمَلَائِكَةِ وَالنَّبِيِّينَ وَالصّٰلِحِينَ مِمَّا قَدْ أَفْلَحَ كَلْبُ : जो मुज पर रोज़े जुमुआ दुइद शरीक़ पड़ेगा में कियामत के दिन उस की शक़ाअत

गअे. हज़रते मौला अली رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمِ ने क़ब्र वालों की सलाम किया और इरमाया : अै क़ब्र वालो ! तुम अपनी ખબर बताओगे या हम तुम्हें बताअें ? सय्यिदुना सईद رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ बिन मुसय्यब رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ इरमाते हैं के हम ने क़ब्र से “**وَعَلَيْكَ السَّلَامُ وَرَحْمَةُ اللَّهِ وَبَرَكَاتُهُ**” की आवाज़ सुनी और कोई कलने वाला कल रहा था : या अमीरल मुअमिनीन ! आप ही खबर दीजिये के हमारे मरने के बा'द क्या हुवा ? हज़रते मौला अली رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمِ ने इरमाया : सुन लो ! तुम्हारे माल तकसीम हो गअे, तुम्हारी बीवियों ने दूसरे निकाल कर लिये, तुम्हारी औलाद यतीमों में शामिल हो गई, जिस मकान को तुम ने बहुत मज़बूत बनाया था उस में तुम्हारे दुश्मन आबाद हो गअे. अब तुम अपना हाल सुनाओ. येह सुन कर अेक क़ब्र से आवाज़ आने लगी : या अमीरल मुअमिनीन ! हमारे कफ़न इट कर तार तार हो गअे, हमारे बाल ज़ड कर मुन्तशिर हो गअे, हमारी खालें टुकडे टुकडे हो गई हमारी आंभें बह कर रुप्सारों पर आ गई और हमारे नथनों से पीप बह रही है और हम ने जो कुछ आगे त्बेज (या'नी जैसे अमल किये) उसी को पाया, जो कुछ पीछे छोडा उस में नुकसान हुवा. (شَرْحُ الصُّدُورِ ص २०९، ابن عَسْكَرٍ ج २٧ ص ३९०)

क़हां हैं वोह भूब सूरत येहरे ?

हज़रते सय्यिदुना अबू अक़ सिदीक رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ दौराने भुत्बा इरमाया करते : क़हां हैं वोह भूब सूरत येहरे वाले ? क़हां हैं अपनी जवानियों पर ईतराने वाले ? क़िधर गअे वोह बादशाह जिन्हों ने आलीशान शहरे ता'मीर करवाअे और उन्हें मज़बूत क़ल्ओं से तक्वियत बफ़्शी ? क़िधर यले गअे मैदाने जंग में गालिब आने वाले ? बेशक़ ज़माने ने उन को जलील कर दिया और अब

करमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ : मुज पर दुइदे पाक की कसरत करो बेशक येह तुम्हारे दिये तखारत है. (अहमद)

येह क़ब्र की तारीकियों में पडे हैं. जल्दी करो ! नेकियों में सभ्कत करो ! और नजात तलब करो.

(شُعَبُ الْإِيمَانِ لِلْبَيْهَقِيِّ ج ٧ ص ٣٦٥ حديث ١٠٠٩٥)

अमी से तय्यारी कर लीजिये

मीठे मीठे इस्लामी भाईयो ! अमीरुल मुअमिनीन उजरते सय्यिदुना सिदीके अक़बर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ हमें दुन्या की बे सबातियों, इस की बे वफ़ाईयों और क़ब्र की तारीकियों का अहसास दिला कर ज्वाबे ग़फ़लत से बेदार इरमा रहे हैं, क़ब्रो उशर की तय्यारी का जेहून दे रहे हैं. वाकेई अक़ल मन्ह वोही है जो मौत से क़बल मौत की तय्यारी करते हुअे नेकियों का ज़पीरा एकट्ठा कर ले और सुन्नतों का म-दनी यराग क़ब्र में साथ लेता जाअे और यूं क़ब्र की रोशनी का इन्तिजाम कर ले, वरना क़ब्र हरगिज़ येह लिहाज़ न करेगी के मेरे अन्धर कौन आया ! अमीर हो या इकीर, वज़ीर हो या उस का मुशीर, हाकिम हो या मलकूम, अइसर हो या यपरासी, सेठ हो या मुलाज़िम, डॉक्टर हो या मरीज़, ठेकेदार हो या मजदूर अगर किसी के साथ भी तोशअे आभिरत में कमी रही, नमाज़ें कस्दन कज़ा कीं, र-मजान शरीफ़ के रोजे बिला उज़रे शर-ई न रभे, इर्ज़ छोते हुअे भी ज़कात न दी, इज इर्ज़ था मगर अदा न किया, बा वुजूदे कुदरत शर-ई पर्दा नाफ़िज़ न किया, मां बाप की ना इरमानी की, जूट, गीबत, युगली की आदत रही, इल्मों, डिरामे देभते रहे, गाने बाजे सुनते रहे, दाढी मुंडवाते या अेक मुट्ठी से घटाते रहे. अल गरज़ ખૂબ गुनाहों का बाज़ार गर्भ रખा तो अद्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ की नाराज़ी की सूरत में सिवाअे इसरत व नदामत के कुछ हाथ न आअेगा. जिस ने इराईज के साथ

કરમાને મુસ્તફા صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : તુમ જહાં ભી હો મુઝ પર દુરુદ પઢો કે તુમ્હારા દુરુદ મુઝ તક પહોંચતા હૈ. (ખુરાન)

સાથ નવાફિલ કી ભી પાબન્દી કી, ૨-મઝાનુલ મુબારક કે ઈલાવા નફલી રોઝે ભી રખે, ગલી ગલી કૂચા કૂચા નેકી કી દા'વત કી ધૂમેં મચાઈ, કુરઆને પાક કી તા'લીમ ન સિર્ફ ખુદ હાસિલ કી બલકે દૂસરોં કો ભી દી, “ચૌક દર્સ” દેને મેં હિચ-કિયાહટ મહસૂસ ન કી, “ઘર દર્સ” જારી કિયા, સુન્નતોં કી તરબિચ્યત કે મ-દની કાફિલોં મેં હર માહ કમ અઝ કમ તીન દિન સફર કરને કે સાથ સાથ દીગર મુસલ્માનોં કો ભી ઈસ કી રગબત દિલાઈ, રોઝાના મ-દની ઈન્આમાત કા રિસાલા પુર કર કે હર મ-દની માહ કે ઈબ્તિદાઈ 10 દિનોં કે અન્દર અન્દર અપને ઝિમ્મેદાર કો જમ્મ કરવાયા, અલ્લાહ عَزَّوَجَلَّ ઔર ઉસ કે પ્યારે રસૂલ صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم કે ફઝલો કરમ સે ઈમાન સલામત લે કર દુન્યા સે રુખ્સત હુવા તો اِنَّ شَاءَ اللہُ عَزَّوَجَلَّ ઉસ કી કબ્ર મેં હશર તક રહમતોં કા દરિયા મૌજેં મારતા રહેગા ઔર નૂરે મુસ્તફા صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم કે ચશમે લહરાતે રહેંગે.

કબ્ર મેં લહરાઓં ગે તા હશર ચશમે નૂર કે

જલ્લા ફરમા હોગી જબ તલ્કત રસૂલુલ્લાહ કી صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم (હદાઈકે બખ્શિશ શરીફ)

સિંગર (ગુલૂકાર) દા'વતે ઈસ્લામી મેં કૈસે આયા ?

ઐ આશિકાને રસૂલ ! બસ હર દમ દા'વતે ઈસ્લામી કે મ-દની માહોલ સે વાબસ્તા રહિયે اِنَّ شَاءَ اللہُ عَزَّوَجَلَّ દોનોં જહાં મેં બેડા પાર હોગા. આઈયે ! આપ કી તરગીબ વ તહરીસ કે લિયે એક ઈમાન અફરોઝ મ-દની બહાર આપ કે ગોશ ગુઝાર કરતા હું યુનાચ્ચે

करमाने मुस्तफ़ा صلى الله تعالى عليه وآله وسلم : जिस ने मुज़ पर दस मर्तबा दुइटे पाक पढा अल्लाह उस पर सो रहमतें नाज़िल करमाता है. (अहमद)

मलीर (आबुल मदीना करानी) के अेक ईस्लामी लार्ड (उम्र तकरीबन 27 साल) का बयान कुछ यूँ है के मुझे बचपन में ना'तेँ पढने का शौक था, घरेलू इंकशन्स (तकारीब) में ली कलमी कलमार इरमाईशी गाना गा लेता. आवाज़ अख़ी होने के सबब ખૂબ दाद मिलती जिस से मैं "कूल" पडता. जब थोडा बडा हुवा तो गिटार (अेक आलअे मूसीकी) सीखने का शौक यराया, इर मैं ने बा काईदा गाना सीखने के लिये अेकेडमी में दाखिला ले लिया, कई साल तक सीखने के बा'द मैं ने गाने के मुकाबलों में डिस्सा लेना शुइअ कर दिया, कई टीवी येनल पर ली गाया. वक्त के साथ साथ शोहरत ली मिलती गई. इर मुझे दुबई के बहुत बडे शो (प्रोग्राम) में शिर्कत का मौकअ मिला, वहां से हिन्द (भारत) यला गया जहां तकरीबन छ माह तक गाने के मुप्तलिफ़ मुकाबलों में डिस्सा लिया, बडे बडे इंकशन्स और इिल्मों में गाना गाया और काई नाम व माल कमाया. इर गुलूकारों की टीम के साथ दुन्या के मुप्तलिफ़ मुमालिक में गया जिन में [केनेडा (टोरन्टो, वींक्वर), अमरीका के 10 स्टेट्स (शिकागो, लोस अेन्जेलस, सान फ़ान्सिस्को वगैरा), इंग्लेन्ड (लन्डन)] में गया. जब कुछ अर्से के लिये वतन आया तो अहले खाना और महल्ले दारों ने बडी पजीराई की, अगर्जे नइस को ईस से बडा मजा आया मगर दिल् की दुन्या बे सुकून थी, कुछ कमी सी महसूस हो रही थी. दिल् इलानिय्यत का तलब गार था, नमाज़ के लिये मस्जिद में आना खाना हुवा तो वहां पर ईशा की नमाज़ के बा'द होने वाले दर्से इेजाने सुन्नत में शिर्कत की सआदत मिली. दर्स अख़ा लगा लिहाजा मैं कलमी कलमार उस में बैठने लगा मगर दिल्ो दिमाग पर बार बार मुल्क से बाहर जाने ખૂब गाने सुनाने, धन दौलत कमाने और शोहरत पाने का लूत सुवार था, दर्स के बा'द ईस्लामी लार्ड मुज़ पर खूँ ही

इरमाने मुस्तफा صلى الله تعالى عليه وآله وسلم : जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुझ पर दुइद शरीक न पड़े तो वोह लोगों में से कज्जस तरीन शम्स है. (अहमद)

ईन्किरादी कोशिश शुइअ करते मैं टाल मटोल कर के निकल जाता. अेक रात सोया तो प्वाब में दा'वते ईस्लामी के अेक मुबत्विलेग की जियारत हुई जे बुलन्द जगह पर ञडे मुजे अपने पास बुला रहे थे गोया के मुजे गुनाहों के दलदल से निकलने पर उतार रहे थे, जब सुब्ह उठा तो अपने मौजूदा अन्दाजे जिन्दगी पर कुइ देर गौरो झिक किया मगर गुनाहों त्बरी हालत ही रही, कुइ अर्से बा'द में ने अेक और प्वाब देखा जिस ने मुजे खिला कर रण दिया ! क्या देखाता हूं के मैं मर युका हूं और मेरी लाश को गुस्ल दिया जा रहा है, फिर मैं ने खुद को बरज्जभ में पाया, उस वक्त मैं ने अपने आप को अैसा बेबस महसूस किया के कत्मी न किया था, अब मैं ने खुद से कहा : "तुम बहुत मशहूर होना चाहते थे, देख ली अपनी औकात !" सुब्ह जब आंख खुली तो मैं पसीने में नहाया हुवा था और मेरा बदन थरथर कांप रहा था और यूं लग रहा था गोया अेक मौकअ और देते हुअे मुजे दोबारा दुन्या में त्बेज दिया गया हो. अब मेरे सर से गाना गाने का त्भूत मुकम्मल तौर पर उतर युका था, मैं ने गुनाहों से सख्खी तौबा की और अज़्मे मुसम्मम कर लिया के आयन्दा किसी सूरात में त्भी गाना नहीं गाउंगा. जब घर वालों को ईस बात का पता यला तो उन्हों ने सप्त मुजा-हमत की मगर अद्लाह व रसूल عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के करम से मेरा म-दनी जेहन बन युका था लिहाजा मैं अपने झैसले पर काईम रहा. मुजे प्वाब में दोबारा उसी मुबत्विलेगे दा'वते ईस्लामी की जियारत हुई, उन्हों ने मेरी हौसला अइजाई इरमाई. अद्लाह तआला के ईस ईशदि मुबारक : **وَالَّذِينَ جَاهَدُوا فِينَا لَنَهْدِيَهُمْ لِمَنْ سَبَّلْنَا وَإِنَّ اللَّهَ لَمَعَ الْمُحْسِنِينَ** (तर-ज-मअे कज्जुल ईमान : और जिन्हों ने हमारी राह में कोशिश की

इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ : उस शब्स की नाक भाक आवुद हो जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुज पर दुरेद पाक न पड़े. (१/६)

उत्तर हम उन्हें अपने रास्ते दिखा देंगे और बेशक अद्लाह (عَزَّوَجَلَّ) नेकों के साथ है. (१/११, १/१२) के मिस्दाक मुजे दा'वते ईस्लामी में ईस्तिकामत मिलती यली गई. मैं ने नमाजों की पाबन्दी शुरू कर दी, अपने गेहरे पर दाढी शरीफ़ सजा ली और अपने सर को सभ्ज सभ्ज ईमामे से सर सभ्ज कर लिया. पहले मैं गानों के अशआर पढा करता था अब मक-त-बतुल मदीना से शाअेअ होने वाली कुतुब व रसाईल का मुता-लआ करना मेरा मा'मूल था. अक रात कोई किताब पढते पढते जब सोया तो मेरी किस्मत अंगड़ाई ले कर जाग उठी और मुजे प्वाब में अपने आका व मौला صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ की जियारत नसीब हो गई जिस पर मैं अपने रब عَزَّوَجَلَّ का जितना भी शुक्र कर्ने कम है. ईस से मेरे दिल को बड़ी ढारस मिली. फिर मुफ़्तये दा'वते ईस्लामी हजरते अद्लामा हाफ़िज मुफ़्ती मुहम्मद इब्न अतारी म-दनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَنِي की कब्र मुबारक मुसल्लल बरसात की वजह से जब खुली तो उन के सडीह सलामत बदन, ताजा कफ़न, सभ्ज सभ्ज ईमामे और गुल्फों के जल्वे देख कर मैं खुशी से जूम उठा के दा'वते ईस्लामी के वाबस्तागान पर अद्लाह व रसूल صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ का कैसा करम व अेहसान है. म-दनी काम करते करते कल का गुलूकार जुनेद शैख म-दनी माहोल की ब-र-कत से आज का मुबद्लिग व ना'त प्वान बन गया, الْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ ता हमे तहरीर मुजे दा'वते ईस्लामी की जैली मुशा-वरत के फाटिम (निगरान) की हैसियत से मस्जिद और बाजार में इँजाने सुन्नत का दर्स देने, सदाअे मदीना लगाने या'नी नमाजे इशूर के लिये जगाने, अलाकाई दौरा बराअे नेकी की दा'वत करने की सआदत हासिल है. अद्लाह عَزَّوَجَلَّ मुजे मरते हम तक म-दनी माहोल में ईस्तिकामत नसीब इरमाअे .

इरमाने मुस्तफा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर रोजे जुमुआ दो सो बार दुइठे पाक पढा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होगे. (क़ुरआन)

99 अस्माउल हुस्ना की प्वाअ मे तरगीअ

अै आशिकाने रसूल और मेरे भीठे भीठे इस्लामी भाईयो !

दुन्या के मशहूर व मा'रूफ़ साबिक गुलूकार (SINGER) जुनैद शैअ ने येह "म-दनी अहार" लिअवा देने के कुछ दिन आ'द सगे मदीना के अताया के "أَحْمَدُ اللَّهِ عَزَّوَجَلَّ" डाल ही में मुजे फिर अेक बार सरकारे नामदार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का दीदार हुवा, जिस में अल्लाह के अस्माउल हुस्ना याद करने का इशारा मिला.

वोह में ने याद कर लिये हैं." प्यारे प्यारे इस्लामी भाईयो ! سُبْحَانَ اللَّهِ عَزَّوَجَلَّ यूं तो हदीसे पाक में 99 अस्माउल हुस्ना याद करने की इज्जलत मौजूद है मगर अुश नसीबी की मे'राज के आका صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने प्वाअ में तशरीफ़ ला कर अपने दीवाने को अुसूसियत के साथ इस की तरगीअ इशाद इरमाई. 99 अस्माउल हुस्ना की इज्जलत सुनिये और जूमिये युनान्ये अल्लाह के महबूअ, दानाअे गुयूअ, मुनज़्जहुन अनिल उयूअ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इरमाने रइमत निशान है : अल्लाह के निनानवे नाम हैं जिस ने इन्हें याद कर लिया वोह जन्नत में दाअिल होगा.

(صحيح بخارى ج ٢ ص ٢٢٩ حديث ٢٧٣٦)

(तफ़सीली मा'लूमात के लिये "नुज़्जतुल कारी शरह सहीहुल अुआरी" सफ़हा 895 ता 898 मुला-इजा इरमा लीजिये)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

भीठे भीठे इस्लामी भाईयो ! अयान को इअिताम की तरफ़ लाते हुअे सुन्नत की इज्जलत और यन्द सुन्नतें और आदाअ अयान करने की सआदत हासिल करता हूं. ताजदारे रिसालत, शअन्शाडे नुअुवत, मुस्तफ़ा जाने रइमत, शअ्अे अजमे ह्दयत, नोशअे अजमे जन्नत صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का

इरमाने मुस्तफा صلى الله تعالى عليه وآله وسلم : मुज पर दुइद शरीक पढो अद्लाह तुम पर रहमत भेजेगा. (अनसरी)

इरमाने जन्नत निशान हे : “जिस ने मेरी सुन्नत से मडब्बत की उस ने मुज से मडब्बत की और जिस ने मुज से मडब्बत की वोह जन्नत में मेरे साथ होगा.”

(مشكاة التصايع ج 1 ص 55 حديث 170 دارالكتب العلمية بيروت)

सुन्नतें आम करें, दीन का हम काम करें

नेक हो जाओ मुसल्मान, मदीने वाले

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

“म-दनी हुलया अपनाओ” के यौदह दुइइ की निस्बत से लिबास के 14 म-दनी इल

पहले तीन इरामीने मुस्तफा صلى الله تعالى عليه وآله وسلم मुला-हज्जा

हों : 《1》 जिन्न की आंभों और लोगों के सित्र के दरमियान पर्दा येह है के जब कोई कपडे उतारे तो बिस्मिल्लाह कह ले.

《2》 मुइस्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हजरते मुइती अहमद यार पान عليه رحمة الختان इरमाते हैं :

जैसे दीवार और पर्दे लोगों की निगाह के लिये आड बनते हैं जैसे ही येह अद्लाह (عَزَّوَجَلَّ) का ठिक जिन्नात की निगाहों से आड बनेगा के जिन्नात उस को देख न सकेंगे. (मिरआतुल मनाज्जल,

जि.1, स.268)

《3》 जो शप्स कपडा पहने और येह पढे : تَابِ الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي كَسَانِي هَذَا وَرَزَقَنِيهِ مِنْ غَيْرِ حَوْلٍ مِنِّي وَلَا قُوَّةٍ उस के अगले पिछले गुनाह मुआइ हो जाओगे.

《4》 हुआ का तरजमा : तमाम ता'रीफें अद्लाह (عَزَّوَجَلَّ) के लिये जिस ने मुझे येह कपडा पहनाया और मेरी ताकत व कुव्वत के बिगैर मुझे अता किया

《5》 जो बा वुजूदे कुदरत अख्खे कपडे पहनना तवाज्जुअ (या'नी आजिजी) के तौर पर छोड दे, अद्लाह तआला उस

करमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुज पर कसरत से दुरुद्वे पाक पढो बेशक तुम्हारा मुज पर दुरुद्वे पाक पढना तुम्हारे गुनाहों के लिये मंगकिरत है. (मू०)

को करामत का हुद्ला पहनाओगा.

(سُنَنِ ابُو دَاوُدَ، ج ٤ ص ٣٢٦ حديث ٤٧٧٨)

तेरी सादगी पे लाभों तेरी आजिजी पे लाभों

हों सलामे आजिजाना म-दनी मदीने वाले

﴿4﴾ भा-तमुल मुर-सलीन, रहुमतुदिलल आ-लमीन

صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का मुबारक लिबास अकसर सफ़ेद कपडे का होता

﴿5﴾ كَشَفَ الْإِتْبَاسَ فِي اسْتِحْبَابِ الْإِبَاسِ لِشَيْخِ عَبْدِالْحَقِّ الدَّهْلَوِيِّ ص ٣٦

लिबास हलाल कमाई से हो और जो लिबास हराम कमाई से
हासिल हुवा हो, उस में ईर्ज़ व नफ़ल कोई नमाज़ कबूल नहीं होती

﴿6﴾ मन्कूल है : जिस ने बैठ कर एमामा बांधा, या षडे

हो कर सरावील (या'नी पाजामा या शलवार) पहनी तो अद्वाल

उसे जैसे मरज़ में मुतला इरमाओगा जिस की दवा नहीं

पहनते वक्त सीधी तरफ़ से शुइअ कीजिये म-

सलन जब कुर्ता पहनें तो पहले सीधी आस्तीन में सीधा हाथ

दाखिल कीजिये फिर उलटा हाथ उलटी आस्तीन में (ایضاً ص ٤٣)

﴿8﴾ ईसी तरह पाजामा पहनने में पहले सीधे पाईंये में सीधा पाउं

दाखिल कीजिये और जब उतारने लगे तो ईस के भर अक्स या'नी

उलटी तरफ़ से शुइअ कीजिये ﴿9﴾ दा'वते ईस्लामी के ईशाअती

ईदारे मक-त-अतुल मदीना की मत्बूआ 312 सफ़हात पर मुशतमिल

किताब, "अहारे शरीअत" हिस्सा 16 सफ़हा 52 पर है : सुन्नत

येह है के दामन की लम्बाई आधी पिंडली तक हो और आस्तीन की

लम्बाई जियादा से जियादा उंग्लियों के पौरों तक और यौडाई अक

बाविशत हो (رَدُّالْمُحْتَرَجِ ٩ ص ٥٧٩) ﴿10﴾ सुन्नत येह है के मर्द का

तहबन्द या पाजामा टप्ने से ठीपर रहे (मिरआत जि. 6, स. 94)

﴿11﴾ मर्द मर्दाना और औरत ज़नाना ही लिबास पहने. छोटे

करमाने मुस्तफ़ा : طى اللّٰه تالى غلبه والوسم : जो मुज पर अेक दुइद शरीफ़ पढता है अल्लाह उंस के लिये अेक कीरात अज़र लिखता है और कीरात उइद पढाउ जितना है. (ज़िज़्ज़)

अज्यो और अज्यियों में भी इस बात का लिहाज़ रभिये ﴿12﴾
 दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक-त-अतुल मदीना की मत्बूआ
 1250 सइहात पर मुशतमिल किताब, “अहारे शरीअत” जिल्द
 अव्वल सइहा 481 पर है : मर्द के लिये नाफ़ के नीचे से घुटनों के
 नीचे तक “औरत” है या'नी इस का छुपाना इर्ज़ है. नाफ़ इस में
 दाखिल नहीं और घुटने दाखिल हैं. (رُؤْمُكَرُورُؤْدُالْمُحْتَارِ ج ٢ ص ٩٣).
 इस जमाने में अहुतेरे जैसे हैं के तहअन्द या पाजामा इस तरह
 पहनते हैं के पेडू (या'नी नाफ़ के नीचे) का कुछ हिस्सा खुला रहता
 है, अगर कुर्ते वगैरा से इस तरह छुपा हो के जिल्द (या'नी आल)
 की रंगत न यमके तो भैर, वरना हराम है और नमाज़ में यौथाई
 की मिकदार खुला रहा तो नमाज़ न होगी (अहारे शरीअत) ﴿13﴾
 आज कल आ'ज़ लोग नीकर (डाफ़ पेन्ट) पहने इरते हैं जिस से
 उन के घुटने और रानें नज़र आती हैं येह हराम है, जैसे के खुले
 घुटनों और रानों की तरफ़ नज़र करना भी हराम है. बिल खुसूस
 दरिया के कनारे पर, भेलकूद के मैदान और वरजिश करने के मकामात
 पर इस तरह के मनाज़िर जियादा होते हैं. लिहाज़ा जैसे मकामात
 पर जाने में सप्त अेहतियात जइरी है ﴿14﴾ तकब्बुर के तौर पर
 जो लिबास हो वोह मम्नूअ है. तकब्बुर है या नहीं इस की शनाप्त
 यूं करे के इन कपडों के पहनने से पहले अपनी जो हालत पाता था
 अगर पहनने के आ'द भी वोही हालत है तो मा'लूम हुवा के इन
 कपडों से तकब्बुर पैदा नहीं हुवा. अगर वोह हालत अब बाकी
 नहीं रही तो तकब्बुर आ गया. लिहाज़ा जैसे कपडे से अये के
 तकब्बुर अहुत भुरी सिइत है.

(अहारे शरीअत, हिस्सा : 16, स. 52 मक-त-अतुल मदीना आबुल मदीना
 करायी, رُؤْدُالْمُحْتَارِ ج ٩ ص ٧٩ دارالمعرفة بيروت)

इरमाने मुस्तफ़ा صلى الله تعالى عليه واله وسلم : जिस ने किताब में मुज़ पर दूइटे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरिश्ते उस के लिये ईस्तिस्कार करते रहेंगे। (अ)।

म-दनी हुल्य़ा

दाढी, जुल्फ़ें, सर पर सज़ सज़ ईमामा शरीफ़ (सज़ रंग गहरा या'नी डाक़ न हो) सईद कुर्ता कली वाला सुन्नत के मुताबिक़ आधी पिउली तक लम्बा, आस्तीनें अेक बालिशत यौडी, सीने पर दिल् की ज़ानिब वाली ज़ेब में नुमायां मिस्वाक, पाजामा या शलवार टप्नों से ऊपर. (सर पर सईद यादर और पट्टे में पट्टा करने के लिये म-दनी ईन्आमात पर अमल करते हुअे कथ्थई यादर भी साथ रहे तो मदीना मदीना) बयान कर्दा म-दनी हुल्य़े में जब किसी ईस्लामी भाई को देजता हूं तो मेरा दिल् बाग़ बाग़ बल्के बागे मदीना हो ज़ता है !

दुआअे अतार : या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मुजे और म-दनी हुल्य़े में रहने वाले तमाम ईस्लामी भाईयो को सज़ सज़ गुम्बद के साअे में शहादत, ज़न्तुल बकीअ में मदफ़न और ज़न्तुल फिरदौस में अपने प्यारे महुबूब صلى الله تعالى عليه واله وسلم का पडोस नसीब करमा.

أهيين بجاا النبى الأميين صلى الله تعالى عليه واله وسلم

उन का दीवाना ईमामा और जुल्फ़ो रीश में

लग रहा है म-दनी हुल्य़े में वोड कितना शानदार

उजारों सुन्नतें सीपने के लिये मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ दो कुतुब “बुदारे शरीअत” डिस्सा 16 (312 सईडत) नीज़ 120 सईडत की किताब “सुन्नतें और आदाब” उदिय्यतन हासिल कीजिये और पढिये. सुन्नतों की तरबिय्यत का अेक बेहतरीन जरीआ द्दा'वते ईस्लामी के म-दनी काफ़िलों में आशिकाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सईर भी है.

सीपने सुन्नतें काफ़िले में यलो वूटने रहमतें काफ़िले में यलो

डोगी डल मुश्किलें काफ़िले में यलो पाओगे ब-र-कतें काफ़िले में यलो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ



اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اِنَّا بَعْدَ فَتْرَةٍ بِاللّٰهِ مِنَ الشُّبُهَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

सुन्नत की महारें

सबसे गुरवानो सुन्नत की अलमगीर गैर सियासी तहरीक दा'वते इस्लामी के महके महके म-दनी माहोल में ब कसरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती है, हर जुमा रात इला की नमाज के बाद आप के सहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ्तावार सुन्नतों भरे इतिहास में रिजाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निव्यतों के साथ खरी रात गुजारने की म-दनी इतिहास है। अशिकवाने रसूल के म-दनी क्वाफिलों में ब निव्यते सवाब सुन्नतों की तरबिव्यत के लिये सफर और रोज़ना फिके मदीना के जरीए म-दनी इन्आमात का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह के इतिहास दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के जिम्मेदार को जन्ज करवाने का मा'मूल बना लीबिये, **إِنَّ قِيَامَ اللَّهِ مَوْزَعًا** इस की ब-र-कत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफरत करने और ईमान की हिफ़ाज़त के लिये कुदने का ज़ेहन बनेगा।

हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेहन बनाए कि "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश करनी है **إِنَّ قِيَامَ اللَّهِ مَوْزَعًا**" अपनी इस्लाह की कोशिश के लिये "म-दनी इन्आमात" पर अमल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश के लिये "म-दनी क्वाफिलों" में सफर करना है। **إِنَّ قِيَامَ اللَّهِ مَوْزَعًا**

मक-त-सतुल मदीना की शाखें

मुम्बई : 19, 20, मुहम्मद अली रोड, मांडवी पोस्ट ऑफिस के सामने, मुम्बई फ़ोन : 022-23454429

देहली : 421, मटिया महल, ठूँ बाजार, चामेअ मस्जिद, देहली फ़ोन : 011-23284560

नागपूर : गरीब नवाज मस्जिद के सामने, सैफ़ी नगर रोड, मोमिन पुत्र, नागपूर : (M) 09373110621

अजमेर शरीफ़ : 19/216 फ़लाहे दारैन मस्जिद, नाला बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह, अजमेर फ़ोन : 0145-2629385

हैदराबाद : पानी की टंकी, मुग़ल पुत्र, हैदराबाद फ़ोन : 040-24572786

दुबली : A.J. मुदोल चम्पलेब, A.J. मुदोल रोड, ओल्ड दुबली ब्रॉड के पत्र, दुबली, कर्नाटक, फ़ोन : 08363244860

मक-त-सतुल मदीना

दा'वते इस्लामी



फ़ैज़ाने मदीना, बी कोनिया बागीचे के सामने, मिरजापूर, अहमदआबाद-1, गुजरात, इन्डिया
Mo.091 93271 68200 E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com www.dawateislami.net